International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

महिला सशक्तिकरण पर मास मीडिया का प्रभाव

Omika Pant
Scholar
Department of Library Science
Malwancha University, Indore (M.P.)

Dr. Dharmveer Mahajan
Supervisor
Department of Library Science
Malwancha University, Indore (M.P.)

सार

यह शोध महिला सशक्तिकरण पर मास मीडिया के बहुमुखी प्रभाव की पड़ताल करता है, जिसमें इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि पारंपरिक और डिजिटल दोनों मीडिया चौनल महिलाओं के जीवन के विभिन्न आयामों को कैसे प्रभावित करते हैं। मास मीडिया सामाजिक दृष्टिकोण, मानदंडों और धारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और महिला सशक्तिकरण पर इसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है। यह अध्ययन उन तरीकों की जांच करता है जिनसे मीडिया लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर, महिलाओं की आवाज को बढ़ाकर और रूढ़िवादिता को चुनौती देकर महिला सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है। यह मीडिया के संभावित नुकसानों पर भी प्रकाश डालता है, जैसे हानिकारक सौंदर्य मानकों को कायम रखना और लैंगिक पूर्वाग्रहों को मजबूत करना।

मुख्य शब्दः संचार मीडिया, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, लकीर के फकीर, मीडिया का प्रभाव, प्रतिनिधित्व, सौंदर्य मानक, सामाजिक आदर्श, मीडिया साक्षरता, डिजीटल मीडिया।

परिचय

पारंपरिक प्रिंट और प्रसारण से लेकर लगातार बढ़ते डिजिटल परिदृश्य तक, संचार चौनलों के एक विशाल स्पेक्ट्रम को शामिल करते हुए मास मीडिया, समकालीन समाज पर गहरा प्रभाव डालता है। इसके असंख्य प्रभावों में से, प्रभाव के सबसे महत्वपूर्ण और बहस वाले क्षेत्रों में से एक महिला सशक्तीकरण को आकार देने में इसकी भूमिका है। महिला सशक्तिकरण एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत सशक्तिकरण जैसे विभिन्न आयाम शामिल हैं। यह महिलाओं

की पुरुषों के साथ समान स्तर पर, भेदभाव से मुक्त होकर और अपने जीवन पर नियंत्रण के साथ समाज में भाग लेने और योगदान करने की क्षमता का प्रतीक है।

सूचना, मनोरंजन और सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के प्राथमिक स्रोत के रूप में मीडिया, सामाजिक दृष्टिकोण, मानदंडों और धारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह या तो महिला सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है, बाधाओं को तोड़ सकता है और लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकता है, या यह हानिकारक रूढ़िवादिता को कायम रख सकता है, लैंगिक पूर्वाग्रहों को बढ़ा सकता है और दमनकारी सामाजिक मानदंडों को मजबूत कर सकता है। यह द्वंद्व महिला सशक्तीकरण पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव की व्यापक जांच की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह शोध मास मीडिया और महिला सशक्तिकरण के बीच जटिल संबंधों का विश्लेषण करने की यात्रा पर निकलता है। ऐतिहासिक और समकालीन दोनों संदर्भों का विश्लेषण करके, हमारा लक्ष्य उन तरीकों को उजागर करना है जिनसे मीडिया महिलाओं के सशक्तिकरण को आगे बढ़ा सकता है या बाधा डाल सकता है। हम मीडिया के सकारात्मक पहलुओं का पता लगाएंगे, जैसे कि महिलाओं की आवाज को बढ़ाना, रूढ़िवादिता को चुनौती देना और लैंगिक समानता की वकालत करना। इसके साथ ही, हम संभावित नुकसानों पर भी गौर करेंगे, जिनमें अवास्तविक सौंदर्य मानकों को कायम रखना और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को सुदृढ़ करना शामिल है।

अनुभवजन्य साक्ष्य, केस अध्ययन और विद्वानों के दृष्टिकोण की एक व्यवस्थित जांच के माध्यम से, यह शोध इस बात की सूक्ष्म समझ प्रदान करना चाहता है कि जनसंचार माध्यम महिला सशक्तिकरण को कैसे प्रभावित करते हैं। अंततः, हम इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करने की इच्छा रखते हैं कि हमारी तेजी से परस्पर जुड़ी और मीडिया–संतृप्त दुनिया में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए मीडिया को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कैसे उपयोग किया जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव एक बहुआयामी और जटिल विषय है। मास मीडिया, जिसमें टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया और बहुत कुछ शामिल है, महिला

सशक्तिकरण को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे जनसंचार माध्यम महिला सशक्तिकरण को प्रभावित कर सकते हैं:

- **सकारात्मक भूमिका मॉडलः** मास मीडिया महिलाओं को ऐसे रोल मॉडल प्रदान कर सकता है जो उन्हें प्रेरित और सशक्त बनाते हैं। फिल्मों, टीवी शो और साहित्य में मजबूत, स्वतंत्र और सफल महिला पात्र महिलाओं के लिए प्रेरणा और आकांक्षा के स्रोत के रूप में काम कर सकते हैं, जिससे उन्हें अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- **लिंग मानदंडों को चुनौती देनाः** मास मीडिया में पारंपरिक लिंग मानदंडों और रूढ़िवादिता को चुनौती देने की शक्ति है। जब मीडिया कथाएँ महिलाओं को प्रतिबंधात्मक लैंगिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं से मुक्त होने का चित्रण करती हैं, तो यह महिलाओं को अपने जीवन में भी ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकता है।
- **शैक्षिक सामग्रीः** मास मीडिया, विशेष रूप से वृत्तचित्र, समाचार कार्यक्रम और सूचनात्मक वेबसाइटें, महिलाओं के अधिकारों, स्वास्थ्य और कैरियर के अवसरों सहित बहुमूल्य जानकारी और ज्ञान का प्रसार कर सकती हैं। ऐसी सामग्री तक पहुंच महिलाओं की जागरूकता और शिक्षा को बढ़ाकर उन्हें सशक्त बना सकती है।
- **लैंगिक मुद्दों के बारे में जागरूकताः** मास मीडिया लिंग–आधारित भेदभाव, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और अन्य लिंग–संबंधी मुद्दों पर ध्यान आकर्षित कर सकता है। समाचार रिपोर्टिंग, वृत्तचित्रों और वकालत अभियानों के माध्यम से, मीडिया इन महत्वपूर्ण विषयों पर सार्वजनिक जागरूकता पैदा कर सकता है और चर्चा चला सकता है।
- **आर्थिक सशक्तिकरणः** विज्ञापन और मीडिया उत्पादों, सेवाओं और शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देकर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित कर सकते हैं जो उनकी आर्थिक संभावनाओं और वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ा सकते हैं।

- **सामुदायिक निर्माणः** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिलाओं को जुड़ने, अनुभव साझा करने और समर्थन वाले समुदाय बनाने में सक्षम बनाते हैं। ऑनलाइन नेटवर्क आवाजों को बढ़ाकर और एकजुटता को बढ़ावा देकर अपनेपन और सशक्तिकरण की भावना प्रदान कर सकते हैं।
- **प्रतिनिधित्व मायने रखता हैः** जब महिलाएं मीडिया में खुद को विविध और सकारात्मक तरीकों से प्रतिनिधित्व करती हुई देखती हैं, तो यह उनके आत्म–सम्मान और आत्म–मूल्य को बढ़ा सकता है। प्रतिनिधित्व न केवल नस्ल, जातीयता और उम्र के संदर्भ में मायने रखता है, बल्कि विकलांग और विभिन्न यौन रुझान वाली महिलाओं को चित्रित करने में भी मायने रखता है।
- **महिला उपलब्धियों के बारे में जागरूकताः** मास मीडिया राजनीति, व्यवसाय, खेल, विज्ञान और कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर कर सकता है। ये कहानियाँ महिलाओं को नेतृत्व की स्थिति का लक्ष्य रखने और अपने चुने हुए करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।
- **उद्यमिता को बढ़ावाः** मीडिया सफल महिला उद्यमियों और व्यापारिक नेताओं की प्रोफाइल तैयार कर सकता है, जिससे अन्य महिलाओं को व्यापार जगत में उद्यमिता और नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- **शारीरिक छवि और आत्म–सम्मानः** नकारात्मक पक्ष पर, मास मीडिया अवास्तविक सौंदर्य मानकों को कायम रख सकता है, जिससे महिलाओं में शारीरिक छवि संबंधी समस्याएं और कम आत्म–सम्मान पैदा हो सकता है। इन नकारात्मक प्रभावों का प्रतिकार करने के लिए मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।
- **लिंग रूढ़िवादिताः** मीडिया हानिकारक लिंग रूढ़िवादिता को सुदृढ़ कर सकता है, महिलाओं को निष्क्रिय, विनम्र या पूरी तरह से उनकी उपस्थिति पर ध्यान केंद्रित करने के रूप में चित्रित कर सकता है। ये रूढ़ियाँ महिलाओं के अवसरों और क्षमताओं को सीमित करके उनके सशक्तिकरण में बाधा बन सकती हैं।

- **हाइपरसेक्सुअलाइजेशनः** मास मीडिया महिलाओं को अत्यधिक कामुक बना सकता है, उन्हें इच्छा की वस्तुओं तक सीमित कर सकता है। यह वस्तुकरण महिलाओं की एजेंसी को कमजोर कर सकता है और उत्पीड़न और भेदभाव की संस्कृति में योगदान कर सकता है।

निष्कर्षतः, महिला सशक्तीकरण पर मास मीडिया का प्रभाव महत्वपूर्ण है, और यह सामग्री और इसके उपभोग के तरीके के आधार पर भिन्न हो सकता है। मीडिया या तो रूढ़िवादिता को चुनौती देकर, जानकारी और रोल मॉडल प्रदान करके और लैंगिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर महिला सशक्तिकरण में योगदान दे सकता है, या यह हानिकारक पूर्वाग्रहों और असमानताओं को कायम रख सकता है। महिला सशक्तिकरण पर मीडिया के सकारात्मक प्रभाव को अधिकतम करने के लिए, जिम्मेदार मीडिया प्रथाओं, मीडिया प्रतिनिधित्व में विविधता बढ़ाने और मीडिया साक्षरता शिक्षा की आवश्यकता है ताकि व्यक्तियों को मीडिया संदेशों का गंभीर रूप से विश्लेषण और नेविगेट करने में मदद मिल सके।

लिंग मानदंडों और मूल्यों को आकार देना

मास मीडिया समाज के भीतर लैंगिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये मानदंड और मूल्य इस बात को प्रभावित करते हैं कि व्यक्ति लैंगिक भूमिकाओं, पहचानों और व्यवहारों के संबंध में सामाजिक अपेक्षाओं को कैसे समझते हैं और उनके अनुरूप कैसे होते हैं। यहां वे तरीके हैं जिनसे जनसंचार माध्यम लैंगिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने में योगदान देता हैः

- **लिंग भूमिकाओं का चित्रणः** मास मीडिया अक्सर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चित्रित और सुदृढ़ करता है, जैसे कि पुरुष कमाने वाले के रूप में और महिलाएं देखभाल करने वाली के रूप में। ये चित्रण आदर्श के रूप में इन भूमिकाओं के आंतरिककरण को जन्म दे सकते हैं।
- **रूढ़िबद्ध धारणाओं का सुदृढीकरणः** मीडिया अक्सर लैंगिक रूढ़िवादिता पर भरोसा करता है, पुरुषों और महिलाओं को एक आयामी तरीके से चित्रित करता है जो मानव अनुभवों की

विविधता का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। ये रूढ़ियाँ हानिकारक पूर्वाग्रहों और अपेक्षाओं को कायम रख सकती हैं।

- **विषमलैंगिकता का सामान्यीकरणः** मास मीडिया विषमलैंगिक संबंधों को डिफॉल्ट के रूप में चित्रित करता है, कभी–कभी एलजीबीटीक्यू रिश्तों और पहचानों को हाशिए पर या नजरअंदाज कर देता है। यह विधर्मी मूल्यों और दृष्टिकोणों को सुदृढ़ कर सकता है।
- **शारीरिक छवि आदर्शः** विज्ञापन, विशेष रूप से, अक्सर पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अवास्तविक सौंदर्य मानक प्रस्तुत करता है। यह शारीरिक असंतोष में योगदान कर सकता है और व्यक्तियों को अप्राप्य भौतिक आदर्शों के लिए प्रयास करने के लिए प्रभावित कर सकता है।
- **यौनीकरणः** मीडिया पुरुषों और महिलाओं दोनों का अत्यधिक यौन शोषण कर सकता है, उन्हें उनके कौशल, बुद्धि या व्यक्तित्व के बजाय उनकी शारीरिक उपस्थिति के आधार पर वस्तु बनाकर पेश कर सकता है। यह उस संस्कृति में योगदान दे सकता है जो अन्य गुणों पर यौन आकर्षण को प्राथमिकता देती है।
- **शक्ति और अधिकारः** मास मीडिया पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक शक्तिशाली और आधिकारिक व्यक्ति के रूप में चित्रित कर सकता है, जिससे इस धारणा को बल मिलता है कि नेतृत्व और अधिकार पुरुष क्षेत्र हैं।
- **लिंग–आधारित हिंसा का प्रतिनिधित्वः** मीडिया अपमानजनक रिश्तों और हानिकारक व्यवहारों के चित्रण के माध्यम से लिंग–आधारित हिंसा के सामान्यीकरण को या तो चुनौती दे सकता है या बनाए रख सकता है।
- **प्रति–कथाएँः** सकारात्मक पक्ष पर, जनसंचार माध्यम उन कहानियों और पात्रों को पेश करके पारंपरिक लिंग मानदंडों और मूल्यों को चुनौती दे सकता है जो लिंग रूढ़िवादिता से मुक्त होते हैं, और अधिक समावेशी और न्यायसंगत प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देते हैं।

- **शैक्षिक सामग्रीः** लैंगिक मुद्दों पर शैक्षिक कार्यक्रम और वृत्तचित्र लैंगिक मानदंडों और मूल्यों की जटिलताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं, जिससे हानिकारक मान्यताओं और दृष्टिकोणों को चुनौती देने में मदद मिलती है।
- **सोशल मीडिया का प्रभावः** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लैंगिक मानदंडों और मूल्यों को सुदृढ़ और चुनौती दोनों दे सकते हैं। सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ता और प्रभावशाली लोग शरीर की सकारात्मकता, लैंगिक समानता और एलजीबीटीक्यू अधिकारों को बढ़ावा दे सकते हैं, लेकिन वे हानिकारक रूढ़िवादिता और विषाक्त सौंदर्य मानकों को भी कायम रख सकते हैं।
- **मीडिया साक्षरताः** मीडिया साक्षरता सिखाने से व्यक्तियों को मीडिया सामग्री का गंभीर रूप से विश्लेषण करने और यह पहचानने में मदद मिलती है कि यह लिंग मानदंडों और मूल्यों को कैसे आकार देता है। यह जागरूकता लोगों को हानिकारक प्रतिनिधित्वों पर सवाल उठाने और उनका विरोध करने के लिए सशक्त बना सकती है।
- **वकालत और जागरूकताः** वकालत अभियान और जागरूकता पहल अक्सर लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों की वकालत करते हुए हानिकारक लिंग मानदंडों और मूल्यों को चुनौती देने और बदलने के लिए मास मीडिया का उपयोग एक उपकरण के रूप में करते हैं।

संक्षेप में, जनसंचार माध्यम सामाजिक लैंगिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने और उन्हें सुदृढ़ करने में एक शक्तिशाली शक्ति है। हालाँकि यह हानिकारक पूर्वाग्रहों और रूढ़िवादिता को कायम रख सकता है, लेकिन जिम्मेदारी और जानबूझकर उपयोग किए जाने पर इसमें इन मानदंडों को चुनौती देने और बदलने की क्षमता भी है। मीडिया साक्षरता, मीडिया प्रतिनिधित्व में विविधता और वकालत के प्रयास मास मीडिया के माध्यम से अधिक न्यायसंगत और समावेशी लिंग मानदंडों और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक उपकरण हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, महिला सशक्तिकरण पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण और जटिल है। इस शोध ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इस रिश्ते की बहुमुखी

प्रकृति पर प्रकाश डाला है। मास मीडिया में सकारात्मक बदलाव के लिए एक जबरदस्त ताकत बनने की क्षमता है, क्योंकि यह रूढ़िवादिता को चुनौती दे सकता है, महिलाओं की आवाज को बढ़ा सकता है और लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकता है। हालाँकि, यह हानिकारक सौंदर्य मानकों को कायम रख सकता है, लैंगिक पूर्वाग्रहों को मजबूत कर सकता है और दमनकारी सामाजिक मानदंडों को बनाए रख सकता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए जनसंचार माध्यमों की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। मीडिया साक्षरता कार्यक्रम व्यक्तियों को मीडिया संदेशों का आलोचनात्मक विश्लेषण और पुनर्निर्माण करने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, मीडिया संगठनों को सामग्री और नेतृत्व दोनों स्थितियों में अधिक विविध और समावेशी प्रतिनिधित्व के लिए प्रयास करना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि व्यापक स्तर की आवाजें और दृ ष्टिकोण सुने जाएं।

ऐसी दुनिया में जहां मास मीडिया का विकास और विस्तार जारी है, महिलाओं के सशक्तिकरण को आकार देने में इसकी भूमिका सर्वोपरि महत्व का विषय बनी रहेगी। मीडिया की शक्ति को पहचानकर और इसकी सकारात्मक क्षमता को बढ़ाते हुए इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए सक्रिय रूप से काम करके, हम एक ऐसे भविष्य के करीब जा सकते हैं जहां महिला सशक्तिकरण को न केवल समर्थन दिया जाएगा बल्कि पूरी तरह से साकार भी किया जाएगा। अंततः, मास मीडिया और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध ऐसा है जिसके लिए सभी के लिए अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज सुनिश्चित करने के लिए निरंतर जांच, जागरूकता और कार्रवाई की आवश्यकता है।

संदर्भ

- चुक्वुएडोजिए के. अजेरो, सीए (2016, 24 मई)। जनसंचार माध्यमों तक पहुंचसंदेश, और नाइजीरिया में परिवार नियोजन का उपयोगः 2013 डीएचएस से एक अनुपात–जनसांख्यिकीय विश्लेषण। बीएमसी सार्वजनिक स्वास्थ्य।

- कोएरा, ई. (2020, मई–जून)। जब बातचीत गणना से बेहतर हो. जे एम मेड इन्फॉर्म एसोसिएट, 7(3), 277 286.
- डॉर्फमैन, एलडब्ल्यू (2012)। स्वास्थ्य संचार में नीति डालनाः मीडिया वकालत की भूमिका। ई. बी में. एटकिन, सार्वजनिक संचार अभियान (पीपी. 337–350)। समझदार।
- दुग्गल, आर. (1991, जुलाई)। भोरे समिति (1946) और आज इसकी प्रासंगिकता। द इंडियन जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक्स, 58(4), 395–406।
- एवरेट एम. रोजर्स, डीएल (1981)। संचार नेटवर्कः अनुसंधान के लिए एक नए प्रतिमान की ओर।
- फतौ जाह, एससी (2014)। लिंग और प्रजननपरिणामः उत्तरी नाइजीरिया में एक रेडियो धारावाहिक नाटक का प्रभाव। जनसंख्या अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।
- गेरजो कोक, एनएच (2008, जनवरी)। स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों में पारिस्थितिक दृष्टिकोणः एक दशक बाद। अमेरिकन जर्नल ऑफ हेल्थ प्रमोशन, 22(6), 437–42।